 ISSN 2581-9917

लघु किंतु मूल्यवान

नीरजा शर्मा*

ईश्वर ने इस सृष्टि की रचना इस प्रकार से की है कि जीवन में प्रकृति के कण-कण का और प्रत्येक प्राणी का महत्व और उपयोगिता है, कौन, कब, कहां अपना महत्व और उपयोगिता प्रकट करता है यह समय और परिस्थिति पर निर्भर करता है। जीवन में किसी भी वस्तु और व्यक्ति का महत्व कम न आंकें, इस सोच के साथ आगे बढ़े कि हर छोटी से छोटी वस्तु का महत्व है और समय पड़ने पर उस स्थान पर उसी का अधिक महत्व है।

रहीमदास जी ने भी अपने अनुभव से यह लिखा है कि

'रहिमन देखि बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि,
जहां काम आवें सुई, कहा करे तरवारि'

रहीमदास जी कहते हैं कि हमें कभी भी बड़ी वस्तु की चाहत के कारण छोटी वस्तु का अनादार नहीं करना चाहिए क्योंकि जो काम एक सुई कर सकती है वो काम एक तलवार नहीं कर सकती।

यह कहानी हम सभी ने अपने बचपन में जरूर सुनी होगी -

एक जंगल में एक सर्प रहता था। वह रोज चिड़ियों के अंडों, चूहों, मेंढ़कों एवम खरगोश जैसे छोटे छोटे जानवरों को खाकर अपना पेट भरता था। वह आलसी बहुत था। एक ही स्थान पर पड़े रहने के कारण कुछ ही दिनों में वह काफी मोटा हो गया। जैसे-जैसे वह ताकतवर होता गया, वैसे-वैसे उसका घमंड भी बढ़ता गया। एक दिन सर्प ने सोचा, मैं जंगल में सबसे ज्यादा शक्तिशाली हूं। इसलिए मैं ही जंगल का राजा हूं। अब मुझे अपनी प्रतिष्ठा और आकार के अनुकूल किसी बड़े स्थान पर रहना चाहिए। यह सोचकर उसने अपने रहने के लिए एक विशाल पेड़ का चुनाव किया। पेड़ के पास चींटियों की बस्ती थी और वहाँ ढेर सारे मिट्टी के छोटे छोटे कण जमा थे उन्हें देखकर उसने घृणा से मुंह बिचकाया और कहा : 'यह गंदगी मुझे पसंद नहीं, यह बवाल यहाँ नहीं रहना चाहिए'। वह गुस्से से बिल के पास गया और चींटियों से बोला : 'मैं नागराज हूं इस जंगल का राजा। मै आदेश देता हूँ कि जल्द से जल्द इस गंदगी को यहां से हटाओ और चलती बनो'। सर्पराज को देख कर वहाँ रहने वाले अन्य छोटे-छोटे जानवर थर-थर कांपने लगे, पर नन्ही चींटियों पर उसकी धौंस का कोई असर नहीं पड़ा। यह देखकर सर्प का गुस्सा बहुत अधिक बढ़ गया और उसने अपनी पूंछ से बिल पर कोड़े की तरह से प्रहार किया। इससे चींटियों को बहुत क्रोध आया। क्षणभर में हजारों चींटियां बिल से निकलकर बाहर आयी और सर्प के शरीर पर चढ़कर उसे काटने लगीं। नागराज को लगा जैसे उसके शरीर में एक साथ हजारों कांटे चुभ रहे हों। वह असह्य वेदना से बिलबिला उठा। असंख्य चींटियां उसे नोच-नोचकर खाने लगी। वह उनसे छुटकारा पाने के लिए छटपटाने लगा। मगर इससे कोई फायदा नहीं हुआ। कुछ देर तक इसी तरह से संघर्ष करता रहा, बाद में अत्यधिक पीड़ा से

* स्वतंत्र लेखिका एवं कलाकार

उसकी जान निकल गई। उसके बाद भी चींटियों ने उसे नहीं छोड़ा और उसका नर्म मांस नोच नोचकर खा गई। कुछ ही देर बाद वहां सर्प का अस्थि-पंजर पड़ा था। इसलिए कहते हैं कि किसी को छोटा समझकर उसपर बेवजह रोब नहीं जमाना चाहिए। बहुत सारे छोटे मिलकर बड़ी शक्ति बन जाते हैं।

एक छोटा वायरस पूरी दुनियाँ को चुनौती देने की ताकत रखता है,जिसे हम सभी ने पिछले कुछ वर्षों में देखा है। एक छोटे से कोविड वायरस ने पूरी दुनिया के सभी महान लोगों और वैज्ञानिकों को चुनौती दी है।

इस ब्रह्मांड में, कुछ भी महत्वहीन नहीं है, सब कुछ अपने तरीके से महत्वपूर्ण हैं। इस सत्य को समझने में मानवजाति की विफलता ही उन की समस्याओं का मूल कारण है जिन्हें हम संसार में देखते हैं। छोटे विवरणों के बारे में असावधानी अंततः गंभीर समस्याओं का कारण बन जाती है, यहां तक कि मृत्यु भी। यदि हवाई जहाज पर सिर्फ एक पेंच ढीला हो जाता है, तो अंततः दुर्घटना हो सकती है इसलिए हमें कभी भी किसी भी चीज को महत्वहीन नहीं समझना चाहिए।

एक बार एक जूनियर डॉक्टर ने घबराहट में एक सम्मानित वरिष्ठ डॉक्टर को बुलाया, उन्होंने कहा कि एक मरीज आया है, किसी तरह उसके गले में एक छोटी-सी गेंद घुस गई है और वह हांफ रहा है अगर हम कुछ नहीं करते है तो उसका दम घुट जाऐगा लेकिन मुझे नहीं पता कि क्या करना है? वरिष्ठ डॉक्टर ने थोड़ी देर सोचा फिर कहा, 'एक काम करो एक पंख लो और उसे गुदगुदी करो' जूनियर डॉक्टर थोड़ा हैरान था लेकिन वरिष्ठ डॉक्टर के निर्देशों का पालन किया। कुछ ही मिनटों बाद जूनियर डॉक्टर ने अपने सीनियर डॉक्टर को फिर फोन किया और खुशी से सफलता की सूचना दी उन्होंने कहा : 'सर जब मैंने उसे गुदगुदी की तो वह हंसने लगा और जल्द ही गेंद सीधे बाहर निकल गई। आपने यह अद्भुत तकनीक कहां से सीखी'? वरिष्ठ डॉक्टर ने उत्तर दिया : 'यह मुझे सिखाया नहीं गया, जब आपने स्थिति का वर्णन किया, मैंने बस इसके बारे मे सोचा और आपको समझाया, बस इतना ही'।

अतः हर वस्तु का अपना महत्व होता है ठीक इसी प्रकार से हमें किसी व्यक्ति को भी छोटा नहीं समझना चाहिए उस व्यक्ति का और उसके पद का सदैव सम्मान करना चाहिए किसी भी समाज की व्यवस्था सुचारू रूप से तभी चलती है जब छोटी छोटी बातों को भी महत्वपूर्ण दृष्टि से देखा भाला जाता है, सभी पद और सभी वर्ग के लोगों को महत्व दिया जाता है। परिस्थितियों के अनुसार कई बार ऐसे भी अवसर आते हैं जहां एक बड़ा अफसर काम नहीं आता वही उसी आफिस का चपरासी काम आ जाता है। पौराणिक कथाओं में भी ऐसी कई घटनाऐं हैं जहाँ समय पड़ने पर उन लोगों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया जिन्हें समाज महत्व नहीं देता था। जगत को भवसागर पार करवाने वाले श्रीराम प्रभु को नदी पार करवाने में केवट के महत्व को भला कौन भूल सकता है। एक छोटा-सा तिनका यदि आंख में पड़ जाए तो पूरे शरीर को विचलित कर देता है। इसी प्रकार कीचड़ के ऊपर ठहरा या तैरता हुआ पानी धन्य है जिसे पीकर छोटे-छोटे जीव अर्थात कीड़े-मकोड़े तृप्त होकर प्रसन्न हो जाते हैं, लेकिन समुद्र की विशाल जलराशि का क्या महत्व, समुद्र में पानी की कमी नहीं, लेकिन उसका पानी पीने योग्य नहीं। इस कारण समुद्र की विशाल जलराशि मनुष्य के लिए महत्त्वहीन है।

ऐसे ही अनगिनत प्रसंग व घटनाऐ हैं जो इस बात का प्रमाण है कि व्यक्ति अथवा उसका पद छोटा होने पर भी महत्वपूर्ण होता है और उसका स्थान अन्य कोई नहीं ले सकता।

कहने का मतलब यही है कि जो वस्तु किसी के काम आए, चाहे वह कम मात्रा में ही क्यों न हो, महत्वपूर्ण होती है, और जो वस्तु किसी के कुछ काम ही न आए, वह अधिक मात्रा में उपलब्ध होने पर भी महत्वहीन होती है। जीवन में भी छोटी-छोटी कोशिशों से बड़ी चीजें हो सकती है, यह महत्वहीन प्रतीत होने वाले मामलों के संबंध में हमारी सावधानी और विवेक पर निर्भर रहता है, बाहरी दुनिया में हम जो ध्यान देते हैं वह हमें धीरे-धीरे आंतरिक दुनिया के संबंध में भी अधिक सतर्क और सावधान बनने में मदद करता है। देखभाल और सावधानी के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करने से हमें दुर्घटनाओं से बचने में मदद मिलती है और यह महान जीत का मार्ग भी प्रशस्त कर सकता है।

◈ ◈ ◈